Shri Manubhai Shah: It is too early to say anything. Once the trucks are manufactured, we shall be in a position to know the cost thereof.

Dr. H. N. KUNZRU: Was this project approved of by the Ministry of Commerce and Industry?

SHRI MANUBHAI SHAH: Yes, Sir, the Government of India as a whole took the decision, including the Ministry of Commerce and Industry.

Dr. H. N. KUNZRU: The hon. Minister has not answered my question. It is the Commerce Ministry that is primarily concerned with the manufacture of articles. Has that Ministry approved of it? The Government of India may have overruled it.

SHRI MANUBHAI SHAH: I am saying that the Ministry approved of it. That is how the Government took the decision.

SHRI V. PRASAD RAO: Is it not a fact that the benefit to the nation would have been more if this manufacture had been taken up in the public sector rather than in the private sector?

SHRI MANUBHAI SHAH: Well, Sir, the Defence Ministry wanted to manufacture these trucks to meet army requirements and the Government of India approved of this scheme in the public sector.

PRICES OF INDIGENOUS CYCLE TYRES AND TUBES

*347. MOULANA M. FARUQI: Will the Minister of COMMERCE AND INDUSTRY be pleased to state:

- (a) whether it is a fact that the prices of the various qualities of indigenous cycle tyres and tubes have been fixed by Government; and
- (b) if so, what measures have been taken or are proposed to be taken to ensure that these are available to the general consumers at controlled rates?

THE MINISTER OF INDUSTRY (SHRI MANUBHAI SHAH): (a) and (b) A statement is laid on the Table of the House.

STATEMENT

- (a) In October, 1955, the manufacturers were asked to fix the price of cycle tyres and tubes, on the basis of the recommendations made by the Tariff Commission.
- (b) The following measures have been taken by Government to ensure fair prices to general consumers:—
 - The production of bicycle tyres and tubes have been stepped up.
 - (2) When there was a shortage of bicycle tyres and tubes in the country, sufficient quantity was imported to augment indigenous production to the desired extent.
 - (3) Even now provision has been made for granting permission to import any specified banned sizes of tyres and tubes on an ad hoc basis.
 - (4) Government have been taking up the matter of ensuring supplies of tyres and tubes at fair prices with the manufacturers from time to time. The manufacturers are endeavouring to see that the bicycle tyres and tubes are sold at fair prices by their dealers and distributors.

مولانا ایم - فاروقی : استیمنت کے پارت بی کے سلسلہ میں جو نمبر ۲ میں آپ نے کہا ھے اس میں آپ یہ فرماتے ھیں کہ بائسکل کے تائر کی شارتیج ھے - تو کیا آپ یہ بتائینگے کہ سنہ ۲۵–۱۹۵۸ میں کتنے تائر امپورت کرنے کی آپ نے اجازت دی -

! मौलाना एम० फारूकी : स्टेटमेंट के पार्ट बी के सिलसिले में जो नम्बर २ में ग्रापने कहा है, उसनें श्राप यह फरमाते हैं कि बाइसिकिल के टायर की शार्टेज है, तो क्या श्राप यह बतायेंगे कि १६५८,५६ में कितने टायर इम्पोर्ट करने की भ्रापने इजाजत दी?]

श्री मनुभाई शाहः दरग्रसल बात यह है कि जो हम रे सैकेंड फाइव ईयर प्लान के एंड को टागट था उस से भी ज्यादा गत साल का प्रोडक्शन हो चका है। इसलिए एक तरीके से साइकिल के टायर श्रीर ट्युब का प्रोडक्शन ज्यादा से ज्यादा हुन्ना है। फिर भी कोई ऐसी वैराइटी है जिसको इम्पोर्ट करना पड़ता है। बहुत थोड़े टायर जो कि हम मंगाते हैं, वे उसी किस्म के हैं जो ग्रभो यहां बनते नहीं हैं।

مولانا ايم - فاروقي : كيا أنويبل منستر بتانیں گے کہ جو تدبیریں آپ نے قیمتیں قامس کرنے کی نکالی ھیں ان کے باوجود بازار میں تائر زیادہ قیمتوں پر بک رہے ھیں -

‡ मौलाना एम० फारूकी : क्या श्रानरेबिल मिनिस्टर बतायेंगे कि जो तदवीरें श्रापने कीमतें फिक्स करने की निकाली हैं, उनके बावजद बाजार में टायर ज्यादा कीमतों पर बिक रहे हैं ?]

श्री मनुभाई शाह : यह तो मैंने बताया कि ऐसी कोई खास शिकायत हमारे पास नहीं म्राई है। यह जरूर है कि कई एक कुंज्यमर किसी खास कम्पनी के टायर को चाहते हैं श्रीर वह टायर मिलने में दिक्कत होती है। लेकिन दो तीन फैक्ट्रियों की शिकायत है कि उनके पास थोड़ा स्टाक बढ़ गया है।

مولانا ایم - فاروقی: سال بهر پهلے بھی میں نے یہ سوال آپ کی خدمت میں پیش کیا تھا اور بازار میں اگر كوئى لےمين جائے تو اسے اندازہ هو جائيمًا که جس آائر کی تیمت ۴ روپیه ۸ آنے ھے وہ ۷ روپیہ ۸ آنے پر بک رھا ھے اور لوگوں کو کافی دقت ھے -

to Questions

‡मौलाना एम० फ.स्की : साल भर पहले भी मैंने यह सवाल आपकी खिदमत में पेश किया था ग्रीर बाजार में ग्रगर कोई ले मैन जाय तो उसे अन्दाजा हो जायगा कि जिस टायर की कीमत ४ रुपये = ग्राने है वह ७ रुपपे - ग्राने पर बिक रहा है ग्रीर लोगों को काफी दिक्कत है।]

श्री मनुभाई शाह : ऐसी कोई शिकायत मानतीय सदस्यों बतायें तो उसके बारे में हम मालुम करेंगे, लेकिन एक ही कम्पनी के टायर सब लोग चाहें तो कैसे मिल सकते है वेसे हम इंडिजनस कैरेसिटी बढ़ाना चाहते हैं श्रौर यह कोशिश कर रहे है कि सब तरह के टायर इस म्लकमें बनें।

Dr. Shrimati SEETA PARMA-NAND: Is Government aware that only some of the licensed dealers are selling them at controlled prices which they say is about Rs. 6, but any number of tyres are available in the mofussil towns at higher rates, higher than even Rs. 7?

SHRI MANUBHAI SHAH: That is precisely the question which I answered. The production of tyres has far exceeded the Second Five Year Plan target, that is, even the target set for 1960-61. We have licensed capacity twice that number, that about 36 million tyres instead of 18 million tyres and production today is even more than this figure but there is selective preference for particular variety which may be in short supply. If the hon, Member has come across any complaint and if she forwards that to us, we shall try to look into the matter.

SHRI H. D. RAJAH: Consequent on the over-production of tyres, has price become cheaper so far as the consumer is concerned?

SHRI MANUBHAI SHAH: That is what I have already said. In 1954, the price of a certain type was Rs. 5-4-0 but the current price is about Rs. 4-10 but this does not cover all varieties. There are hundreds of varieties. This is only an illustration.

PRODUCTION Consumption AND OF PAPER

*348. Moulana M. FARUQI: the Minister of COMMERCE AND INDUS-TRY be pleased to state the estimated annual production and consumption of paper in the country?

MINISTER INDUSTRY THE OF (SHRI MANUBHAI SHAH): Production and consumption of paper and paper boards excluding newsprint during the year 1958 were about 251,000 tons and 265,000 tons respectively.

مولانا ايم - فاروقى : كيا آنريبل ملستر یہ بتائیں گے کہ اس میں کس-کس قسم کے پیپر کتیے ہی رہے

![मौलाना एम० फारूको : क्या ग्रान-रेबिल मिनिस्टर यह बतायेंगे कि इस में किस-किस किस्म के पेपर कितने वन रहे हैं ?]

श्री मनभाई शाह : इसकी फेहरिस्त बहुत लम्बी है। वह सब मैं बता सकता हं। इसमें व्हाइट प्रिटिंग पेपर है सवा दो लाख टन। रैंपिंग पेपर है १५ हजार टन । इन सब को एक लम्बी फेहरिस्त है।

مولانا ایم - فاروقی : میں دوسری بات اس سلسله مین عرض کرتا هوں اور ولا هے نيوز پرنت پيپر کي -آنریبل منستر کو یه اطلاع هے که اس وقت نیوز پرنت پیپر کی بہت زیادہ قیمت هے - تو اس کے لئے کیا تجویز کی جا رهی هے -

‼मौलाना एम० फारूको: मैं दसरी बात इस सिलसिले में अर्ज करता हं वह है न्यूज प्रिट पेपर की। ग्रानरेबिल मिनि-स्टर को यह इतिला है कि इस वक्त इस न्यूज प्रिट पेपर की बहुत ज्यादा कीमत है। तो उसके लिए क्या तजवीज की जा रही है ?]

श्री मनभाई शाह : जहां तक यह सवाल है, इसमें न्युज़ प्रिट नहीं स्राता । लेकिन फिर भी ग्रानरेबिल मेम्बर ने जब यह पूछा है ग्रीर वाकई यह सवाल ग्रहमियत रखता है, तो मैं उनकी सूचना क़े लिए यह बताऊंगा कि हम नेपा में प्रोडक्शन बढाने की कोशिश कर रहे हैं। इसके ग्रल(वा २ फैक्टियां न्यज़ प्रिट क़ी पब्लिक सेक्टर में लगाई जांय , इसकी भी तजवीज चाल

مولانا ایم - فاروقی: آپ کی ایدول رپورت میں یہ تذکرہ ہے کہ اس وقت ایک هی نیپا مل هے اور اس میں نیوز پونٹ بن رھا ھے - اب آپ ایک اور فیکتری بنانے والے هیں اور اس کے سلسله میں آپ ڈسکشن کر رہے ھیں ۔ تو کیا آنریبل منستر یہ بدئیں کے که کب تک وه تسکشی ختم هونے کی امیں ھے -

⋢ मौलाना एम० फारूकी : यह श्रापकी एन्स्रल रिपोर्ट में तज़िकरा है कि इस वक्त एक ही नेपा मिल है और उसी में न्यज प्रिंट बन रहा है। स्रब स्राप एक स्रौर फैक्ट्री बनाने वाले हैं श्रीर उसके सिलसिले में म्राप डिस्कशन कर रहे हैं। तो क्या म्रानरेबिल मिनिस्टर यह बतायेंगे कि कब तक वह डिस्-कशन खत्म होने की उम्मीद है ? 1